श्री सीताराम

॥ भूलाविलास ॥

जिसको

स्वामी श्री १०८ रसरंगमणीजीने रामअनुरागियों के हितार्थ रचनाकर छोटेलाल लक्ष्मीचन्द को छपाने के हित दिया

उसीको

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

सम्पर्ण

बुकसेलर अयोध्या ज़िला फैज़ाबाद ने
मुद्रित कराकर प्रकाश किया
Printed at the Jain Press——Lucknow
अक्टूबर सन १८९९ ई०
सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन हैं

* श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

श्रीसीतारामफूलाविलास

॥ कवित्त ॥

मेघघहरायो छनजोति छहरायोबक पांति बंहरायो मोरपंष फहरायो हैं। वारि वरसायो इन्द्रचाप दरसायो चातकान तरसायो सि ानसरसायो है दादुर बुलायो उरआलिन फुलायो सियारामको झुलायो मदकामको भुलायोहै। भूमिहरिआयो रसरंगमनी गायो मनभावनको भायो आयो सा-

मन सुहायो है ॥ १ ॥ बरषत बारी घटाकारी रसरंगमनीकियो सियाप्यारी बैन पियासो उचार है । करिये तयारी राजरसिकबिहारी संग सखिन सुखारी होती हमहूँ तयार हैं ॥ झमकि झुलावो रंगरमकि रमावो जौक जमकि जमावो गावो सामन मलार है । सरजूके कूला वन फूले सबफूला मोदमूला अनुकूला आई झूलाकी वहार है ॥ २ ॥ सावन सघनघन गगन मै दरसत बरसतबारि घोरघहरि घमंकिकै । दिनहूँ न दीसत दिनेस नन्नि

सीसनिसि दुरत विदिसिदिसि दामि-
नीदमंकिकै ॥ रामरसधाम सियासंग
रसरंगमनी झुकि झुकि झोंकनसो
झूलत झमंकिकै । डरिमुसक्याय कहैं
कंठलपटाय प्यारी लीजैरस रसे रसे
रसिक रमंकिकै ॥ ३ ॥ रसिकाधिराज
राम पिया सिया प्यारीसंग रंगकी उ-
मंग बरसावैं रस झूलि झूलि । झों-
काको लगावैं झुकि झुकि मिलिजावैं
दोऊ अतिसुखपावैं रहिजावैं भानु भूलि
भूलि ॥ आली गीतगावैं हाव भाव
दरसावैं प्रियाप्रीतमै रिझावैं नाचैंनई

गति झूलि झूलि। सावन सोहावन प्र-
मोद बनपावनमै लषन हिंडोरा रस-
रंगमनी फूलि फूलि ॥ ४ ॥ सावनमै
अधिक सोहावन अवधपुर रिमिझि-
मि बरसैं जलदजल जूटि जूटि। पाव-
नि अवनि रमनीयराजै हरीहरी वारी
भरी क्यारी चहूँओर चलीं फूटि फूटि
जानिसमै अनुकूल सखिन सोहागमूल
झूलत हिंडोरे सीताराम सुख लूटि
लूटि। देषि रसरंगमनी दंपतिकी सो-
भाघनी लाजै झषकेतु झषमारै सिर
कूटि कूटि ॥ ५ ॥ कारे कारे घन नभ

दरसत प्यारे प्यारे बरसिगये तें अबै बरसत फेरि फेरि। हरी हरी भूमि हरी हरी रहीं लता भूमि बोलत बिहङ्गमानो मैनमंत्र टेरि टेरि॥ लोनीलोनी ललना सलोनीराग गायगाय नाचैं मोदमाचैं ललीलालनको घेरि घेरि। रमकि रमकि रघुबीर रसरंगमनी सरजूके तीरझूलै सियामुख हेरि हेरि॥ ६॥

छाय छायआये चहूँओर घनघोरकरि सोरजोर बरसैं मधुरझरी लायलाय। लाय लाय गलबांह राजत नवेलीनाह सखिया झुलावैं झुकिझुकि नाचैं गाय

गाय ॥ गायगाय बोलैं मानो कोकिला मधुपकीर सरजूकेतीर तरुफूले नीर पाय पाय । पायपाय पान मुलुकयाय रघुराय सीयझूलैं रसरंगमनी मनमो-द छाय छाय ॥ ७ ॥ सावनी सुतीज मोदबीज रसरंगमनी मनीकूटकुंजबी-च फुलेतरु सावनी । सावनी अवनि हरी सावनी सरजुभरीं सावनी मधुर झरीमेघ बरसावनी ॥ सावनी सुसारी धारि भामिनी समूहगावैं सावनी सुरा-गन्हैंत्यगति दरसावनी । सावनी पुसाक राम स्वामिनी सवारिझूलैं सावनीसु

झूलनि सनेह सरसावनी ॥ ८ ॥ लाल लाल फूल फूले ललित प्रमोद बन बनी ठनी संगसोहैं लाल लाल बालहैं । लाल सियासारी लालबसन बिहारी तनचंद्रिका किरीटलाल लाल उरमालहैं । लाल लाल आननमै पानन कीलालीलमै लालमुसक्याननसो करत निहालहैं । लाल लाल झूलनमै सरजूके कूलनमै हूलैं रसरंगमनी झूलैललली लालहैं ॥ ९ ॥ हरेहरे चंद्रिका किरीट उभैसीस सोहैं हरेहरे माणिनके गरेमाल परेहैं । हरीहरी सारी जरतारी

त्यों किनारी लाल लालहूं बसन तन हरेहरे धरेहैं ॥ हरेहरे रंगउघरे है गौर स्याम मिलेहेरि रसरंगमनी सोभामोद भरेहैं। हरेहरे झूलनपै लसैं हसैंहरेहरे झूलैं सियाराघवबिहारी हरेहरेहैं १०॥ बागवृक्ष बेली झूलैं संगकी सहेली झूलैं सरजूतरंगनसो झूलैं मोदमूलहीं। तुर्राअनमोल झूलै कुंडल सुलोल झूलैं अलक कपोल झूलैंदृग झूलिफूल हीं॥बेनीपीठपर झूलैंबेसरी अधर झूलै झुलनीसुघर झूलैंकर्नफूलडूलहीं।सब ही झुलाय झूलैं झूलनमै सीताराम

योंहींरसरंग मनीनैनन मैं झूलहीं १ १॥
आजैंचहुँओरे नभगाजै घनघोरे तोय
त्याजैथोंरे थोरे बोलैं मंजुमोरी मोरेहैं।
सरजूहलोरे जहांलोहिं चित्तचोरे तहां
जुगलकिसोरेलसैं स्यामल सुगोरेहैं।
जंत्रन टकोरे सखीनाचैं अंगमारेरसरं-
गमनीजोरे जसगावैं तालतोरेहैं॥ मैन
छबि छोरे हसैं हेरि नैनकोरे सीताराम
रसबोरेआज झूलत हिंडोरेहैं॥१२॥
रचेचारु चामीकर दंडनके दोनौंओर
चंद्रकला चारुसीला चवरचलावतीं।
बिमला व्यजनबीजैं छेमाछपानाथ औ-

सोसीता रघुनाथमाथ छत्रछटाछावतीं सहजादिसखी साज लीन्हे रसरंगमनीसुभगासुभगराग सावनकीगावती। झुकिझुकि झमकि झमकि झोंकि झों कनसो अलीलली लालनको झूलन झुलावतीं ॥ १३ ॥ उत घनदामिनी सो दुरतसपेदहोत इतसीताराम दुति थिर एकरस हैं। उतवारि बरसैसो कबहुँ अधिक कम इतजन रुचिसम सुख के बरस हैं। उत छिति हरित औ सरित भरितइत हरी सहचरीचारु नद गाम जस है ॥ उत सुषमोर रसरंग

मनी इत सोहैं सावन ते सिया मनभा-
वन सरसहैं ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

प्रभुछबि छावन हैंसदा यहदिन तीस
बिचारि । सिय मनभावन देषिं द्युति
दीजिय सावन वारिं ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

झूलत दंपति संपति मोरमणी रस
रंग हिंडोर रचायकै । लालन भौंकैं
झुकैं उझकै सियरोकैं ललीकी अली
ललचायकै ॥ नैननचाय निहोरकरैं सु
कुमारीडरैं पियझूलो बचायकै । भूषन

अंगदुकूलषसैं सो हसैं रघुनंदनमोद मचायकै ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

पियझोंका बरजोरदै हँसे षसाय दुकूल । सियजू कछु ताते कियो मंजु मान मुदमूल ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

झूलनको सियबेगि पधारिय धारिय दिव्य दुकूलनको । कूलनको सरजू सरिकेचलि देहु पिया मुदमूलनको ॥ मूलनको सुचिसींचत ज्यों तरु देतस-दा फल फूलनको । फूलनको रसरंग

मनी दृगत्योंहीं लषाइय झूलनको ॥ १६ ॥ सावन मानको मासनहीं सिय प्रीतमहींकी बनैं रुचिराषे। कालहिं डोरमै जो बरजोर कियोसो किसोरबि नै बहुभाषे ॥ बेगिमिलो रसरंगमनी चलिप्यारे तुम्हारे तुम्है अभिलाषे। झूलहु फूलहु केलिकला यहि पाषमै माषको रापहुताषे ॥ १७ ॥ सोसुनिसी यसजी नवसात सुगातमैसारी बिभात भलीहै। चौंरसुछत्र अलीगणब्रात बिनोदन मातहँसात चलीहै ॥ लाल दैमाल मिलेमुसुक्यात बिराजत जोरी

हिंडोर थलीहै । सोछबिदेषि मणीरस रंग अनंगरती मुखस्याही मलीहै १८ झूलैं झुकेरस सागरनागर नागरीप्री- ति पगेसम तूलैं । तूलैं नहींरतिकोटि- नमार अपारन कोलिकला सुषपूलैं ॥ पूलैंअली प्रतिगान नटानन आनन ज्वेत नभानन भूलैं । भूलैंनहीं रसरं- गमनी छिनरामसिया दोउ नैनन झू- लैं ॥ १९ ॥ सावनमास सोहावन है बरसैं गरजैं नभमेघ घमाघम् । कोकि- लमोर सुसोरकरैं चमकैं चपला चहुं ओर चमाचम ॥ रागमलार मणीरस

रंग अलीगन गायसुनाचैं छमाछम् ।
झूलतरामसिया सरजूतट झूलनझो-
कन झारि झमांझम् ॥ २० ॥ साव
नसाहन साहके दुंदुभिसे नभमेघघटा
घहराहीं । त्यों बकआदि विहंग उडैम-
नो मैननटाके बटा बहराहीं ॥ झूलौंले-
येललना रघुलाल सुस्यामल गौरछ
टा छहराहीं । देषतदंग मणीरसरंग
कपोलन केसलटा लहराहीं ॥ २१ ॥
पावसमै रसरीति सुप्रीति पगेसाजेरा-
म सिया समतूलैं । पावतपान पवाव-
तगावत हांकि बयारि परस्पर फूलैं ॥

दोऊदुहूंसुखमालखिकै रसरंगमनी अपनी सुधिभूलैं। लालके लोचनभूलैं लली लसिबाल बिलोचन लालनभूलैं ॥ २२ ॥ सावनसौकमें नेह निकुंज पुरयाली के षंभगड़े अनुकूलैं। भाव कोभौंर बिस्वासको बेलन मंडितडांडी अडोलता तूलैं ॥ प्यारपटा रसरंगमनी रसरेसमहीं कीरसी गहिहूलैं। याही हिंडोरसदा सियराम उपासक संतनके हियभूलैं ॥ २३ ॥

* नथाजल झूलन *

नैनजा मैन बनाव बिसाल लगीफुल-

वारिबसंत कीनैंयां । तामे हिंडोर रचो रसबोर किसोरी किसोर लसैंमुसुकैंयां नाचाहिंगावहिं मंदभुलाय अली युग चंदकी लेहि बलैंयां । संगसिया रस रंगमनी जल झूलन झूलि रहे सिय सैंयां ॥ २४ ॥

॥ कवित्त घनाक्षरी ॥

अतिबिसतार कीहैतरनी तयारतं-न्यो मारकेअगार ज्योंबितान जरतार है । साजिकै सिंगार पगेपरिकर प्यार जुगरुचि अनुसार रचेकेलि नटसारहै ॥ अवधकिनार खड़े सुजन अपाररसं

रंगमणि हारदेषै चरितउदारहैं। बारिमै बिहारसिया कोसल कुमारकरि सरयू केधारकी बिलोकत बहार हैं ॥ २५ ॥

इतिश्री सीताराम झूलाबिलास पचीसी सम्पूर्णम् ॥

॥ पद ॥

करत सिय रघुबर बारि विहार। सखिन सखनजुत जुगल सलोने सरस परसपर पागेप्यार ॥ नईनाव छबि छई बितानन कलबल चलत सरजु जलधार। लसत हिंडोर किसोर किसोरी गोरीनाचहिं गायमलार ॥ भादौ

घनबरसत भरदर जल धोउदलं भरि
खेलहिं पिचकारा दंपति निरषि हंसत
निबसतछबि उररसरंगमणी आगार१

* राह दूसरी *

झूलैं जुगलजल झूलन प्यारी ॥
सखिन सखनजुत सिय रघुनंदन खे-
लैं सरजुबिच नावनवारी । भवरतरंग
उमंग गंगकी धारबहार लखैंसुखका-
री ॥ नाचहिं नवलनटी नई नई गति.
गावहिं सरससमै अनुहारी । बहत त-
रनि खेवत केवट बहु हंसत हेरि दीउ
वारि बिहारी ॥ बिहँसित दंपति बदन

विलोकि भयोरसरंगमणी बलिहारी २

॥ नईनाव मगाये नवलनेही ॥

तापर जलझूलनि सुकेलि कलकर त छयलालिये बैदेही । अलि मनमोद मांचि नाचहिं गति अति मनहरनि तान लेहीं ॥ सिय रघुवर झोकनसो झुकि झुकि सरजु तरंगन छुइलेहीं । सींचत दोउसुचि सलिल सिरनपर लखि सुरसुमन वरसिदेहीं । धनिरस रंगमनी सबपरि कर जे लूटत नित सुखयेही ॥ ३ ॥

॥ इति ॥